Bihar Board Class 8 Hindi Notes Chapter 7 ठेस

ठेस

सिरचन गाँव का एक कुशल कारीगर है जिसने मोथे और पटेर की शितलपाठी, बाँस के कमाची से चिक (पर्दा), सात रंग के डोरी से भोढे, पूंज की रस्सी से बना भूसा रखने वाला जाल, कुश की आसनी और ताल (ताड़)

के पत्ते से छतरी बनने में दूर-दराज तक प्रसिद्धि पा लिया है। लोग बड़े शौक ...से शितलपाटी और चिक बनवाकर अपने-अपने सगे-सम्बन्धियों के यहाँ भेजते

इतने कुशल कारीगर को लोग कामचोर या बेगार मानकर अन्य काम में
– नहीं बुलाते थे। वह कामचोर नहीं था। वह अपने काम को बड़ी ही
तन्मयता – से करता था । उसको मनपसंद भोजन और प्रेमभरी वाणी
मिल जाता तो उसकी तन्मयता देखते बनती थी। यदि कोई बीच में टोक देता तो उसका काम पड़ा ही रह जाता । हाँ यदि एक बार उसे मनपसंद भोजन या पर्याप्त भोजन नहीं मिलता तो दूसरी बार वह वहाँ नहीं जाता और खोलकर अपनी व्यथा व्यंग भाषा में अवश्य बोल देता।

एक ब्राह्मण पंचानंद चौधरी के घर कम और पसंद के लायक भोजन नहीं मिलने पर सिरचन ने पंचानंद के छोटे बेटे से साफ-साफ कह दिया कि तुम्हारी भाभी नाखून पर तरकारी परोसती है तथा कढ़ी इमली देकर बनाती है जो हमारे जैसे कहार-कुम्हारों को घर वाली बनाती है। तुम्हारी भाभी ने कहाँ सीखा।

रेणु जी की माँ जब कभी सिरचन को बुलाने कहती तो रेणु जी माँ से पूछते थे-भोग क्या-क्या लगेगा । लेकिन सिरचन भोजन से ज्यादा प्रेम भरी वाणी का कायल था।

रेणु जी सिरचन को बुलाते हैं उनकी छोटी बहन की विदाई होने वाली है। दामाद जी ने चिट्ठी लिखकर कहा – बर्तन-वासन मिले या न मिले फैशन वाली तीन जोड़ी चिक और पठेर की शीतल पार्टी अवश्य होना चाहिए। सिरचन आता है । माँ कही-सिरचन तुम्हें घी का खखोरन और चुड़ा पसंद है जिसे मैंने व्यवस्था कर रखा है। इस बार असली मोहर छाप वाली धोती भी दूँगी। ऐसा काम करो कि देखने वाले चकित रह जाएँ।

सिरचन अपना काम प्रारम्भ करता है। रेणु जी की मैंझली भाभी परदे के भीतर से ही बोली-मोहर छाप वाली धोती से बढ़िया काम होता है। ऐसा जानती तो भैया को भी खबर कर देती । सिरचन मँझली भाभी की बात सुनते ही बोल उठा "मोहर छाप वाली धोती के साथ रेशम का कुर्ता भी देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती।"

सिरचन को दूसरे दिन चुड़ा और गुड़ खाने को मिला । सिरचन छुआ तक नहीं। यह देखकर रेणुजी कहते हैं, आज सिर्फ चुड़ा-गुड़।

माँ मँझली भाभी से बुदियाँ देने को कहती है। मैंझली भाभी थोड़ी-सी बुन्दियाँ उसके सुप में डाल देती है जिसे देखकर सिरचन बोल उठा-मंझली बहुरानी क्या अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इसी तरह हाथ खोलकर देती हैं। यह सुनते ही मँझली भाभी कमरे में जाकर रोने लगती है। ..."

चाची ने भी सिरचन को किसी के नैहर-ससुराल की बात नहीं करने की चेतावनी दी। माँ आकर कही-सिरचन अपने काम में लगे रहो, किसी से बतकट्टी करने से क्या फायदा।

https://www.evidyarthi.in/

मानू (छोटी बहन) जो पान लगा रही थी एक पान सिरचन को देते हुए कही-सिरचन दादा पाँच लोग पाँच रंग के बात बोलेंगे, कान मत दो।

सिरचन मुस्कुराते हुए पान मुँह में रख लिया। चाची सिरचन को पान खाते देख अचरज में पड़ गई सिरचन ने चाची को अवाक देख बोल उठा-चाची जरा अपना बाला गमकौआ जर्दा तो खिलाना, बहुत दिन हो गये। यह सुनते ही चाची उसे खरी-खोटी सुनाते हुए चटोर, मुँहझौसा, वेलगाम, शीलहीन इत्यादि कह दी तथा चाची यह भी कही कि पैसा खर्च करने पर सैंकड़ों चिक मिल जाएँगे इत्यादि।

बस क्या था, मानो सिरचन को ठेस लग गयी। वह काम बंद करते हुए – अपना औजार समेटा और काम छोड़ चला गया। कहानीकार सिरचन को मनाने जाते हैं लेकिन सिरचन नहीं आया । वह

साफ-साफ कह दिया बबुआजी अब नहीं, मोहर वाली धोती लेकर क्या करूंगा, कौन पहनेगा। . शितलपाटी जिस पर वह बैठा है उसके स्वर्गीय पत्नी के हाथ का बना , है। उसे छूकर वह कसम खाता है। यह काम अब नहीं करूंगा। ...सिरचन में बड़ी ही आत्मीयता थी इसका उदाहरण तब मिलता है जब मानू की विदाई हो गई स्टेशन पर गाड़ी खुलने वाली है सिरचन दौड़ता हुआ . पीठ पर एक गठर लिए हॉफते हुए गेट खोलने को कहता है ।

मानू दीदी को एक बार देख लँ. यह कहते हुए सिरचन गट्ठर खोलकर
कहता है दीदी यह हमारे तरफ से शितलपाठी, चिक और कुश की
आसानी है। मानू मोहर ‘ छापवाली धोती के दाम देना चाहती है लेकिन
सिरचन जीभ को दाँत तले डालकर हाथ जोड लेता है तथा रुपया नहीं लेता है।

गाड़ी खुल गई । मानू रोने लगी। जब उसके गट्ठर को खोल देखा गया तो उसके कारीगरी और उसके प्रति हुए अमानवीय व्यवहार से रेणु जी हतप्रभ जैसे हो गये।

https://www.evidyarthi.in/